भारतीय स्थापत्य की अमूल्य निधि

जैन मंदिर

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल
(*पूर्व जॉइंट डायरेक्टर*)
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
राजस्थान सरकार, कोटा, राजस्थान, भारत

BHARTIYE STHAPATYA KI AMULYA NIDHI JAIN MANDIR

Copyright © : Dr. Prabhat Kumar Singhal
Publishing Rights Ⓟ : VSRD Academic Publishing
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

ISBN-13: 978-93-91462-31-4
FIRST EDITION, AUGUST 2022, INDIA

Printed & Published by:
VSRD Academic Publishing
(*A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.*)

Disclaimer: The author(s) are solely responsible for the contents compiled in this book. The publishers or its staff do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the Authors or Publishers to avoid discrepancies in future.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise, without the prior permission of the Publishers & Author.

Printed & Bound in India

VSRD ACADEMIC PUBLISHING
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

REGISTERED OFFICE
154, Tezabmill Campus, Anwarganj, KANPUR – 208003 (UP) (IN)
Mb: 98999 36803, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

MARKETING OFFICE
340, FF, Adarsh Nagar, Oshiwara, Andheri(W), MUMBAI–400053 (MH)(IN)
Mb: 99561 27040, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

je'k pæ tlu
पूर्व आई. ए. एस.
अखिल भारतीय अध्यक्ष पालीवाल जैन
महासभा,जयपुर

çkDdFku

भारतीय दर्शन के विकास का अनुगमन करने के लिए और भारतीय संस्कृति के उत्तरोत्तर विकास को समझने के लिए जैनदर्शन का अत्यन्त महत्व है। भारतीय विचारधारा में अहिंसावाद के रूप में समन्वयात्मक भावना के रूप में जैनदर्शन और जैन विचारधारा की जो देन है उसको समझे बिना वास्तव में भारतीय संस्कृति के विकास को नहीं समझा जा सकता।

जैन दर्शन एक प्राचीन भारतीय दर्शन है। यह विचारधारा लगभग छठी शताब्दी ई.पू. में भगवान महावीर स्वामी के द्वारा पुनरावर्तित हुयी थी। इस धर्म में वेद की प्रमाणिकता को कर्मकाण्ड की अधिकता और जडता के कारण अस्वीकार किया गया है। जैन धर्म में अहिंसा को सर्वोच्च स्थान देते हुए तीर्थंकरों के उपदेश का दृढता से पालन करने का विधान है। यह विचारधारा मूलतः नैतिकता और मानवतावादी है। इसके प्रमुख ग्रन्थ प्राकृत (मागधी) भाषा में लिखे

गये हैं। बाद में कुछ जैन विद्धानों ने संस्कृत में भी लिखे। उनमें 100 ई. के आसपास आचार्य उमास्वामी द्वारा रचित तत्त्वार्थ सूत्र बड़ा महत्वपूर्ण ग्रंथ है। वह पहला ग्रंथ है जिसमें संस्कृत भाषा के माध्यम से जैन सिद्धान्त के सभी तत्वों का पूर्ण रूप से वर्णन किया गया है। इसके पश्चात अनेक जैन विद्धानों ने संस्कृत में व्याकरण, दर्शन, काव्य, नाटक आदि की रचना की।

जैनदर्शन में विशुद्ध दार्शनिक दृष्टि में इस बात का बड़ा महत्व है कि किसी भी व्यक्ति में दार्शनिक दृष्टि के विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह स्वतंत्र विचारधारा से अपने विचारों का निर्माण करे और परम्परा–निर्मित पूर्वाग्रहों से अपने को बचा सके। लोग जैनदर्शन को नास्तिक भी मानते है जबकि यह मात्र भ्रम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं।

भारतीय दर्शन को इतिहास में जैनदर्शन की अपनी अनोखी देन है। जैनदर्शन "अनेकान्तदर्शन" में विश्वास करता है जो इसका आधारस्तम्भ है। बौद्धिक स्तर में इस सिद्धान्त के मान लेने से मनुष्य के नैतिक और लौकिक व्यवहार में एक महत्व का परिवर्तन आ जाता है। चारित्र ही मानव के जीवन का सार है। चारित्र के लिए मौलिक आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य एक ओर तो अभिमान से अपने को पृथक रखे, साथ ही हीन भावना से भी अपने को बचाये। स्पष्टतः यह मार्ग अत्यन्त कठिन है। वास्तविक अर्थों में जो अपने स्वरूप को समझता है, दूसरे शब्दों में आत्मसम्मान करता है और साथ ही दूसरे के व्यक्तित्व को भी उतना ही सम्मान देता है, वही उपर्युक्त दुष्कर मार्ग अनुगामी बन सकता है। इसीलिए सारे नैतिक समुत्थान में व्यक्तित्व का समादर एक मौलिक महत्व रखता है। जैनदर्शन के उपर्युक्त अनेकान्तदर्शन का अत्यन्त महत्व इसी सिद्धान्त के आधार पर है कि उसमें व्यक्तित्व का सम्मान निहित है। इस प्रकार अनेकान्तदर्शन नैतिक उत्कर्ष के साथ–साथ व्यवहारशुद्धि

के लिए भी जैनदर्शन की एक महान देन है। वर्तमान जगत की विचारधारा की दृष्टि से भी जैनदर्शन के व्यापक अहिंसामूलक सिद्धान्त का अत्यन्त महत्व है।

सभी धर्मो की भांति जैन धर्म में भी कई उप शाखाएं हैं जिनमें श्वेताम्बर और दिगम्बर प्रमुख हैं। अन्य धर्मावलंबियों की तरह जैनियों ने भी अपने आराध्य भगवान की पूजा के लिए प्राचीन समय से मंदिरों का निर्माण कराया। जैन मंदिर न केवल भारत में अपितु भारत के बाहर विदेशों में भी पाए जाते हैं। उत्तर भारत में यद्यपि जैन धर्म का ज्यादा प्रचार होने से मंदिरों का बाहुल्य हैं तथापि दक्षिण भारत में भी जैन बाहुल्य क्षेत्रों में मंदिरों का निर्माण कराया गया। जैन मंदिर केवल जैनियों की श्रद्धा और पूजा के ही स्थान नहीं हैं वरन संस्कृति और धर्म का संरक्षण भी करते हैं। मंदिरों के द्वारा समाज सेवा के अनेक प्रकल्प संचालित किए जाते हैं। मन्दिर स्थापत्य और मूर्ति कला में इतने समृद्ध और आश्चर्यजनक हैं की देश – विदेश के पर्यटकों के आकर्षण का महत्वपूर्ण केंद्र हैं। भारतीय पर्यटन को बढ़ावा देने में जैन मन्दिर अपने आप में महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल भी हैं।

bl –fr dk Lokxr gkuk pkfg,

भारत प्राचीन समय से ही अपनी आध्यात्मिकता, समृद्ध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक धरोहर के कारण दुनिया के प्रमुख पर्यटन देशों में खास पहचान बनाता है। यहां के हर राज्य की अलौकिक और विलक्षण विशिष्टताएं हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। ऋषि – मुनि – तपस्वी भारत भूमि पर सदियों से आध्यात्म की सरिता प्रवाहित कर रहे हैं। देश की इन विविधताओं ने ही अनेक यायावरी लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। प्रख्यात लेखक, पत्रकार, स्तंभकार डॉ. प्रभात कुमार सिंघल,कोटा भी

ऐसे ही यायावरी पुरुष हैं जिनके जीवन का लक्ष्य जीवन की आपाधापी, भागदौड़ से हटकर प्रमुख पर्यटन स्थलों के बीच जीवन के मायने खोजना रहा है। आध्यात्म को पर्यटन से जोड़ कर अनेक विषयों पर कई पुस्तकें लिखने के साथ अपनी पुस्तक भारत स्थापत्य की अमूल्य निधि जैन मन्दिर में अपने अनुभूत तथ्यों का प्रभावी एवं जीवंत चित्रण किया है, जो अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण सामग्री एवं मौलिक तथ्यों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक की विशेषता है कि देश के विख्यात जैन मंदिरों के साथ – साथ पर्यटकों और पाठकों को जैन धर्म के अभ्युदय की पृष्ठ भूमि से जोड़ते हुए जैन धर्म के सभी चौबीस तीर्थंकरों के परिचय से भी साक्षात करती है। निसंदेह जैन धर्म पर लिखे गए अकूत साहित्य के बीच यह पुस्तक नवीनता लिए हुए है। सहज, सरल और सुगम भाषा में लिखी गई यह एक अनूठी, पठनीय, संग्रहणीय एवं ग्रहणणीय पुस्तक बन गई है।

इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने न केवल अपनी धर्मनिरपेक्षता का वरन समाज में शांति, अहिंसा, भाईचारे और सदभाव की प्रवृति को बढ़ाने की अपनी भावना का परिचय दिया है। यह पुस्तक जैन मंदिरों के माध्यम से भारत की स्थापत्य कला को देखने, समझने का अवसर प्रदान करेगी और पर्यटन विकास में सहायक होगी,ऐसी मै आशा करता हूं। पुस्तक की भूमिका लिखने के लिए मुझे मौका मिला इसके लिए मै लेखक को साधुवाद ज्ञापित करते हुए पुस्तक की सफलता की कामना करता हूं।

vkj- lh- tu
एन –19, आदिनाथ नगर, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर – 302018 (राजस्थान)
मोबाइल रू 9414279070, 9829999335
मेल : rcjainras @gmail-com

y[kdh;

हमारे देश में सदियों से सभी धर्मो के लोग भाईचारे की भावना से साथ रहते आए हैं। भारत के धर्मनिरपेक्ष संविधान में सभी को अपने – अपने धर्म का पालन करने और प्रसार करने का अधिकार हैं। भारत में जैन धर्म भी अपने अभियुदय से लेकर आज तक फल–फूल रहा है। जिस प्रकार सभी धर्म के लोगों ने अपने – अपने पूजा स्थल मन्दिर, मस्जिद,चर्च,गुरुद्वारे आदि का निर्माण किया वैसे ही जैन अनुयायियों ने भी उनके पूज्य तीर्थंकर भगवानों के मंदिरों का निर्माण किया। इनके मन्दिर सम्पूर्ण भारत के साथ – साथ विदेशों में भी पाए जाते हैं।

हमारी आस्था के प्रतीक धार्मिक स्थल सभी भारतवासियों की श्रद्धा का केन्द्र हैं। सभी लोग एक दूसरे के धर्म का सम्मान करते हैं और धार्मिक आयोजनों में भाग लेते हैं। पूजा स्थल और धार्मिक आयोजन देश की एकता, भाईचारे और सांप्रदायिक सदभाव को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारी यही प्रवृति देश को एकता की डोर में बंधे रखती है। सभी धर्मों की तरह जैन धर्म के भी अपने सिद्धांत, पूजा पद्धति, नियम हैं। महावीर स्वामी की शिक्षाओं और सिद्धांतों को पूरा जगत मानता है। जैन साधु – संत वर्षों से निरन्तर अपने प्रवचनों के माध्यम से समाज में इनका प्रचार – प्रसार कर समाज को जाग्रत बनाए हुए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक इसी परिपेक्ष में जैन धर्म के उदय , विकास, तीर्थंकरों और मंदिरों पर आधारित है। जैन मंदिर जहां जैनियों की वंदना और श्रद्धा के केंद्र हैं वहीं भारत के पर्यटन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाज के भामाशाहों और श्रेष्ठियों द्वारा निर्मित मंदिरों की अतुल्य कारीगरी, स्थापत्य, मूर्ति कला और भव्य स्वरूप

पर्यटकों के आकर्षण का प्रबल केंद्र हैं। इन्हें देखने के लिए विदेशी पर्यटक भी बड़ी संख्या में आते हैं। विशेषता यह भी है कि अधिकांश प्रसिद्ध मन्दिर शांत वातावरण में प्रकृति के बीच पहाड़ियों पर बनाए गए हैं। यूं तो देश में असंख्य जैन मंदिर हैं परन्तु यहां देश के प्रसिद्ध प्रतिनिधि मंदिरों की जानकारी दी गई है। यह पुस्तक विगत चालीस वर्षों में अनेक जैन मन्दिरों की यात्रा और अध्ययन का एक छोटा सा प्रतिफल है।

पुस्तक लेखन की प्रेरणा के साथ – साथ कीमती समय निकाल कर मार्गदर्शन देने और प्रस्तावना लिखने के लिए मै जयपुर निवासी श्री रमेश चंद्र जैन भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी के प्रति ह्रदय के गहनतम तल से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। विभिन्न प्रशासनिक पदों के अनुभवी अधिकारी विभिन्न जैन संस्थाओं से जुड़ कर सक्रिय रूप से समाज सेवा के विभिन्न प्रकल्पों में लगे हैं। अनेक जैन मन्दिरों के निर्माण में अपनी इंजीनयरिंग का कौशल दिखने वाले कोटा के प्रसिद्ध वास्तुकार श्री अजय बाकलीवाल का भी ह्रदय से आभारी हूं जिन्होंने अपना मार्गदर्शन प्रदान कर सहयोग किया। डॉ. (श्रीमती) रुचि गोयल (जैन) के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने कई जैन मन्दिरों की अपनी यात्रा संस्मरणों से इस कृति को समर्थ बनाने में सहयोग किया।

हस्तिनापुर इंटर कॉलेज के प्राचार्य श्री अवनीश चौहान, लखनऊ के वरिष्ठ पत्रकार श्री विमल पाठक, मुंबई के वरिष्ठ पत्रकार श्री चंद्रकांत शर्मा, झालावाड़ के श्री अनिल त्रिवेदी, बूंदी के श्री अर्जुन सिंह हाड़ा का भी साधुवाद ज्ञापित करता हूं जिन्होंने महत्वपूर्ण जानकारी जुटाने में अपना सहयोग प्रदान किया। पुस्तक की रचना में विभिन्न प्रकार दिए गए मार्गदर्शन और सहयोग के लिए कोटा के डॉ. आर.के.जैन, समाजसेवी महावीर जैन, भारतीय रेलवे कोटा मंडल के सीनियर सेक्शन इंजीनियर श्री अनुज कुमार कुच्छल, एडवोकेट

श्री अख्तर खान 'अकेला', वरिष्ठ पत्रकार श्री के. डी. अब्बासी, श्रीमती तकसीम बानो का भी साधुवाद ज्ञापित करता हूँ। मैं हमेशा रहे याद पाक्षिक समाचार–पत्र के सम्पादक श्री सलीमुद्दी काज़ी का भी तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ जिन्होंने विविध प्रकार से सहयोग प्रदान किया।

आशा करता हूं कि जैन मंदिरों के माध्यम से पूज्य तीर्थंकरों के प्रति श्रद्धा अर्पित करते हुए लिखी गई यह पुस्तक पर्यटन विकास में भी सहायक होगी। पाठकों की प्रतिक्रियाओं का स्वागत है।

शुभकामनाओं सहित!

M,- iHkkr dekj fl?ky

vuqØe

(1) tSu èkeZ dh ,frgkfld i"BHkwfe 1-12

(2) vkjkè; vkSj oanuh; rhFkZadj 13-30

Hkkjr ds tSu efUnj

vkèkz çns'k

(3) xqEehyw# tSu efUnj 31-32

(4) dqyikd tSu efUnj 33-34

fnYyh

(5) iqjkuk yky tSu efUnj 35-37

xqtjkr

(6) 'k=qat; rhFkZ ikyhrk.kk 38-41

>kj[k.M

(7) lEesn f'k[kjth 42-48

dukVd

(8) nfyuk oèkZeku egkohj tSu efUnj 49-50

(9) Jo.kcsyxksyk tSu rhFkZ 51-53

dsjy

(10) èkeZukFk tSu efUnj 54-55

(11) iqfM;kjey tSu efUnj 56-57

eè;çn'k

(12) ckouxtk tu efUnj 58-59
(13) æk.kfxjh tu efUnj 60-61
(14) guery cMk tu efnj 62-66
(15) [ktjkgk tu efnj 67-69
(16) d.My ij efUnj 70-72
(17) lkukfxjh tu efnj 73-75

egkjk"V

(18) ekxhrfx tu rhFk 76-79

if'pe cxky

(19) ikjl ukFk tu efnj] dkydkrk 80-82

jkt LFkku
vtesj

(20) lkuhth dh ufl;k 83-87
(21) ujyh tu rhFk 88-90

vyoj

(22) frtkjk tu efnj 91-95

ckMesj

(23) ukdkMk tu efnj 96-99

chdkuj

(24) HkkMk'kkg tu efUnj 100-102

Hkh yokMk

(25) fctkfy;k tu efnj 103-106

cUnh

(26) efu lorukFk efnj] d”kojk;ikVu 107-108

fpÙkkMx<

(27) tu dhfrLrEHk 109-113

t;ij

(28) l?kh th tu efnj 114-118
(29) inijk tu efnj 119-121
(30) pyfxjh tu efnj] t;ij 122-124

>kykokM

(31) pkn[kMh tu efnj 125-126
(32) 'kkfrukFk tu efnj] >kyjkikVu 127-128
(33) ukx'oj ik'oukFk tu efnj] mUgy 129-130

tlyej

(34) tlyej nx d tu efnj 131-134
(35) ykæok tu efnj 135-137

djkyh

(36) Jh egkohj th 138-142

dkVk

(37) pæ çHk tlu efnj] dUgkMh 143-146
(38) i.;kn; rhFk {k=] nknkckMh 147-149
(39) efu lorukFk fnxEcj tlu efnj] vkj-d-ije..... 150-154

fljkgh

(40) nyokMk tlu efUnj] ekmUVvkc 155-161

ikyh

(41) j.kdij tlu efnj 162-166
(42) Qkyuk Lo.k tlu efnj 167-170

mn;ij

(43) _"kHkno tlu efnj 171-174

rfeyukM

(44) eUukjxMh efYyukFk Lokeh tlu efnj 175-176

mÙkjçn'k

(45) _"kHkno efnj] v;kè;k..... 177-179
(46) gfLrukij Jhfnxcj tlu çkphu cMk efnj..... 180-183
(47) JkoLrh fl){k= ¼lgB&egB½..... 184-186
(48) lUnHk 187-188